

॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥ चतुर्थः प्रश्नः ॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्ध्यो
वैश्यम्। तपसे शूद्रम्। तमसे तस्कर्म। नारकाय
वीरहणम्। पाप्मने क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय
पुंश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय मागधम्॥ १ ॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्।
नर्माय रेभम्। नरिष्ठाय भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय
स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय
तक्षाणम्॥ २ ॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्।
शुभे वपम्। शर्व्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे
ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय
श्वनितम्॥ ३ ॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्।

आर्त्यै॑ परि॒विवि॒दानम्। अरा॑ध्यै दि॒धिषू॒पतिम्। प॒वित्रा॑य
भि॒षजम्। प्र॒ज्ञाना॑य नक्ष॒त्रदर्श॑म्। निष्कृ॑त्यै पेश॒स्कारी॑म्।
बला॑योप॒दाम्। वर्णा॑यानू॒रुधम्॥४॥

न॒दीभ्यः॑ पौञ्जि॒ष्टम्। ऋ॒क्षीका॑भ्यो नैषा॑दम्। पु॒रुष॒व्याघ्रा॑य
दु॒र्मदम्। प्र॒युञ्ज्य॑ उ॒न्मत्त॑म्। गु॒न्ध॒र्वाप्स॒राभ्यो॑ ब्रा॒त्यम्।
स॒र्पदे॒वज॒नेभ्यो॑ऽप्र॒तिप॑दम्। अवे॑भ्यः कि॒तव॑म्। इ॒र्यता॑या
अकि॑तवम्। पि॒शाचे॒भ्यो बि॑दलका॒रम्। या॒तुधा॑नेभ्यः
कण्ट॑कका॒रम्॥५॥

उ॒त्सादे॑भ्यः कु॒ञ्जम्। प्र॒मुदे॑ वाम॒नम्। द्वा॒भ्यः स्ना॑मम्।
स्व॒प्राया॑न्धम्। अध॑र्माय ब॒धिर॑म्। सं॒ज्ञाना॑य स्मरका॒रीम्।
प्र॒कामो॑द्यायोप॒सदम्। आ॒शि॒क्षायै॑ प्र॒श्जिन॑म्। उ॒प॒शि॒क्षाया॑
अभि॑प्र॒श्जिन॑म्। म॒र्यादा॑यै प्र॒श्नवि॒वाक॑म्॥६॥

ऋ॒त्यै स्ते॒नहृ॑दयम्। वैर॑हत्याय पि॒शुन॑म्। वि॒वित्त्यै॑
क्ष॒त्तार॑म्। औप॑द्र॒ष्टाय॑ सङ्ग॒हीता॑रम्। बला॑यानुच॒रम्। भू॒म्ने
परि॑ष्क॒न्दम्। प्रि॒याय॑ प्रि॒यवा॑दिनम्। अरि॑ष्ट्या अश्व॒साद॑म्।
मे॒धाया॑ वासः प॒ल्पू॒लीम्। प्र॒कामा॑य रजयि॒त्रीम्॥७॥

भा॒यै दा॒र्वाहा॑रम्। प्र॒भाया॑ आग्ने॒न्धम्। नाक॑स्य

पृ॒ष्ठाया॑भिषे॒त्तार॑म्। ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टपा॑य पात्रनिर्णे॒गम्।
 दे॒वलो॒काय॑ पेशि॒तार॑म्। म॒नुष्य॑लो॒काय॑ प्रक॒रित॑ारम्।
 सर्वे॑भ्यो लो॒केभ्य॑ उप॒सेत्तार॑म्। अव॑र्त्यै व॒धायो॑पमन्थि॒तार॑म्।
 सुव॒र्गाय॑ लो॒काय॑ भाग॒दुघ॑म्। व॒र्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य
 परि॒वेष्टा॑रम्॥८॥

अ॒र्मे॑भ्यो ह॒स्ति॒पम्। ज॒वाया॑श्च॒पम्। पु॒ष्ट्यै गो॒पा॒लम्।
 तेज॑सेऽज॒पा॒लम्। वी॒र्या॑यावि॒पा॒लम्। इरा॑यै की॒नाश॑म्।
 की॒लाला॑य सु॒राका॑रम्। भ॒द्राय॑ गृ॒ह॒पम्। श्रेय॑से वि॒त्त॒धम्।
 अ॒ध्य॑क्षा॒यानु॑क्ष॒त्तार॑म्॥९॥

म॒न्यवे॑ऽय॒स्ता॒पम्। क्रो॒धा॒य नि॒स॒रम्। शो॒का॒याभि॑स॒रम्।
 उ॒त्कूल॑वि॒कूला॑भ्या॑ त्रि॒स्थि॒नम्। यो॒गा॒य यो॒त्ता॒रम्। क्षे॒मा॒य
 वि॒मो॒त्ता॒रम्। व॒पु॑षे मा॒नस्कृ॑तम्। शी॒ला॒याञ्ज॑नीका॒रम्।
 नि॒र्ऋ॒त्यै को॑शका॒रीम्। य॒मा॒या॒सू॒म्॥१०॥

य॒म्यै य॒म॒सू॒म्। अथ॑र्व॒भ्योऽव॑तो॒काम्। सं॒व॒त्स॒रा॒य
 पर्या॑रिणी॑म्। प॒रि॒व॒त्स॒रा॒यावि॑जा॒ताम्। इ॒दा॒व॒त्स॒रा॒याप॑-
 स्क॒द्वरी॑म्। इ॒द्व॒त्स॒रा॒याती॑त्व॒रीम्। व॒त्स॒रा॒य वि॒ज॑र्ज॒राम्।
 स॒र्व॒न्त्स॒रा॒य प॑लि॒क्री॑म्। व॒ना॒य व॒न॒पम्। अ॒न्यतो॑र॒ण्या॒य

दावपम्॥११॥

सरो॑भ्यो धै॒वरम्। वेश॑न्ताभ्यो दा॒शम्। उ॒प॒स्थाव॑रीभ्यो
बै॒न्दम्। न॒ङ्गुला॑भ्यः शौष्क॒लम्। पा॒र्याय॑ कैव॒र्तम्। अ॒वा॒र्याय॑
मा॒र्गा॒रम्। ती॒र्थेभ्य॑ आ॒न्दम्। विष॑मेभ्यो मैना॒लम्। स्व॒ने॑भ्यः
पर्ण॑कम्। गुहा॑भ्यः कि॒रा॒तम्। सा॒नु॒भ्यो ज॑म्भ॒कम्। पर्व॑तेभ्यः
कि॒म्पू॒रुष॑म्॥१२॥

प्र॒ति॒श्रु॒त्का॑या ऋ॒तु॒लम्। घोषा॑य भ॒षम्। अ॒न्ता॑य
बहु॑वा॒दिन॑म्। अ॒न॒न्ताय॑ मू॒कम्। मह॑से वीणावा॒दम्। क्रोशा॑य
तू॒णव॑ध्मम्। आ॒क्र॒न्दाय॑ दु॒न्दु॒भ्याघा॑तम्। अ॒व॒र॒स्प॒राय॑
शङ्ख॑ध्मम्। ऋ॒भु॒भ्यो॒जिन॑सन्धा॒यम्। सा॒ध्येभ्य॑श्चर्म॒ण्णम्॥१३॥

बी॒भ॒थ्सायै॑ पौल्क॒सम्। भू॒त्यै जा॑गर॒णम्। अ॒भू॒त्यै
स्व॒प॒नम्। तु॒लायै॑ वाणि॒जम्। वर्णा॑य हि॒र॒ण्यका॑रम्।
विश्वे॑भ्यो दे॒वेभ्यः॑ सि॒ध्म॒लम्। प॒श्चा॒द्दोषा॑य ग्ला॒वम्।
ऋ॒त्यै ज॑नवा॒दिन॑म्। व्यृ॒द्ध्या अ॑पग॒ल्भम्। स॒श॒राय॑
प्र॒च्छि॒दम्॥१४॥

ह॒साय॑ पु॒श्च॒लूमा॑ ल॒भते॑। वी॒णावा॑दं ग॒ण॒कं गी॑ताय॑।
याद॑से शा॒बु॒ल्याम्। न॒र्माय॑ भ॒द्रव॑तीम्। तू॒णव॑ध्मं ग्रा॒म॒ण्यं

पा॒णि॒सङ्घा॒तं नृ॒त्ताय॑। मो॒दा॒या॒नु॒क्रो॒शक॑म्। आ॒न॒न्दा॒यं
तल॒वम्॥१५॥

अ॒क्ष॒रा॒जाय॑ कि॒त॒वम्। कृ॒ताय॑ स॒भा॒वि॒नम्। त्रेता॑या
आ॒दि॒न॒व॒दर्श॑म्। द्वा॒प॒राय॑ ब॒हिः स॒दम्। क॒ल॒ये स॒भा॒स्था॒णुम्।
दुष्कृ॑ताय॑ च॒रका॑चार्यम्। अध्व॑ने ब्र॒ह्म॒चा॒रि॒णम्। पि॒शा॒चे॒भ्यः
सै॒लग॑म्। पि॒पा॒सायै॑ गो॒व्य॒च्छम्। नि॒र्ऋ॒त्यै गो॒घा॒तम्। क्षु॒धे
गो॑वि॒कर्त॑म्। क्षु॒त्तृ॒ष्णा॒भ्या॒न्तम्। यो गां वि॒कृ॒न्त॑न्तं मा॒सं
भि॒क्ष॑माण उप॒तिष्ठ॑ते॥१६॥

भू॒म्यै पी॒ठ॒स॒र्पि॒ण॒मा ल॑भते। अ॒ग्नये॑ऽस॒लम्। वा॒यवे॑
चा॒ण्डा॒लम्। अ॒न्त॒रि॒क्षाय॑ व॒श॒न॒र्ति॒नम्। दि॒वे ख॑ल॒तिम्।
सू॒र्याय॑ ह॒र्य॒क्षम्। च॒न्द्रम॑से मि॒र्मि॒रम्। नक्ष॑त्रे॒भ्यः कि॒ला॒सम्।
अ॒ह्ने शु॒क्लं पि॒ङ्ग॒लम्। रा॒त्रि॒यै कृ॒ष्णं पि॒ङ्गा॒क्षम्॥१७॥

वा॒चे पु॒रु॒ष॒मा ल॑भते। प्रा॒णम॑पा॒नं व्या॒नमु॑दा॒नं स॑मा॒नं
ता॒न् वा॒यवे॑। सू॒र्याय॑ चक्षु॒रा ल॑भते। म॒नश्च॒न्द्रम॑से। दि॒ग्भ्यः
श्रो॒त्रम्। प्र॒जाप॑तये॒ पुरु॑षम्॥१८॥

अथै॒तान॑रू॒पे॒भ्य आ॑ल॒भते। अति॑ह॒स्व॒मति॑दी॒र्घम्।
अति॑कृ॒श॒म॒त्यं स॒लम्। अति॑शु॒क्ल॒मति॑कृ॒ष्णम्। अति॑श्लक्ष्ण-

म॒तिलो॑म॒शम्। अ॒ति॑कि॒रिट॒मति॑द॒न्तुर॑म्। अ॒ति॑मि॒र्मि॒रु॒मति॑-
मे॒मिष॑म्। आ॒शा॒यै॑ जा॒मिम्। प्र॒ती॒क्षा॒यै॑ कु॒मा॒रीम्॥१९॥

ब्रह्म॑णे गी॒ताय॑ श्रमा॑य स॒न्धये॑ न॒दीभ्य॑ उ॒त्सा॑देभ्य ऋ॒त्यै भा॒या अ॒र्मेभ्यो॑ म॒न्यवे॑ य॒म्यै
दश॑द॒श॒ सरो॑भ्यो द्वा॒द॒श॒ प्र॒ति॒श्रु॒त्का॑यै बी॒भ॒त्सा॑यै द॒श॑द॒श॒ ह॒सा॑य स॒प्ताक्ष॑रा॒जाय॑ त्रयो॑द॒श॒
भू॒म्यै द॒श॑ वा॒चे ष॒डथ॑ न॒वैका॒न्नवि॑ंश॒तिः॥१९॥

ब्रह्म॑णे य॒म्यै न॒वद॑श॥१९॥

ब्रह्म॑णे कु॒मा॒रीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः
प्रपाठकः समाप्तः॥